paper IX — समाज के स्वतन्त्रता [illegible] (विचार) की विवेचना कीजिए
हैयक

परम्परागत उदारवाद की भांति ही समकालीन उदारवाद भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बहुत अधिक ध्यान केन्द्रित करता है। एवं स्वतन्त्रता के मार्ग में कई रुकावटें आती हैं। इन रुकावटों को दूर करने के लिए विद्वानों ने कई सुझाव भी दिए हैं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के मार्ग में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु बताए गए सुझावों को ~~[illegible]~~ तीन श्रेणियों में रखा गया है — इन तीनों श्रेणियों की विशेषता एक दूसरे ~~से~~ से सम्बन्धित भी है।

(1) उदारवाद की सामान्य धारा
(2) स्वेच्छातन्त्रवाद
(3) समतावाद

उदारवाद की सामान्य धारा के अन्तर्गत Egalitarianism की व्यक्ति की समानता पर बात की गई। स्वेच्छातन्त्रवाद में व्यक्ति के उन्नति के अवसरों पर बल दिया गया है खास कर ऐसे व्यक्तियों के जो स्वयं ~~साधन एवं साधन~~ समर्थ एवं साधन सम्पन्न हो। ~~समान~~ समतावाद में ऐसे व्यक्तियों के विकास पर विचार किया गया है जो साधनहीन हैं।

स्वेच्छातन्त्रवाद बीसवीं ~~[illegible]~~ शताब्दी के उत्तरार्द्ध में

उदारवाद की सामान्य धारा के अन्तर्गत यह बताने का प्रयास किया गया कि सकारात्मक स्वतन्त्रता व्यक्ति की अपनी नैतिक और आर्थिक क्षमता पर निर्भर करता है और जो राज्य केवल नकारात्मक स्वतन्त्रता एवं सकारात्मक स्वतन्त्रता का दायित्व लेता है वह ~~व~~ व्यक्ति को सर्वाधिकारवाद की ओर ले जाता है। इस ~~व~~ तरह अन्ततोगत्वा राज्य व्यक्ति की स्वतन्त्रता का हनन कर लेता है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उदारवादी कुछ उदारवादी विचारकों ने यह महसूस किया कि उदारवाद के अन्तर्गत welfare State की अवधारणा को अपना लिया है

लोक कल्याणकारी राज्य के अन्तर्गत व्यक्ति की स्वतन्त्रता को विभिन्न प्रकार की कर-प्रणाली एवं विभिन्न प्रकार के कानूनों से सीमित कर दिया गया है। अतः विभिन्न विचारक पुनः राज्य के द्वारा सीमित हस्तक्षेप करने के पक्ष में हैं ताकि व्यक्ति की स्वतन्त्रता को फिर से कायम रखा जा सके। उनका मानना था कि उदारवादी शब्द से पुनः राज्य के लोककल्याणकारी स्वरूप का एहसास होता है अतः इसे बदलकर स्वेच्छातन्त्रवाद या स्वतन्त्रतावाद शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।

स्वेच्छातन्त्रवाद पूर्ण स्वतन्त्रता में विश्वास करता है। यह व्यक्ति की स्वतन्त्रता को सीमित करने वाली संस्थाओं एवं रीति रिवाज, परम्परा आदि से मुक्त रखना चाहता है।

स्वेच्छातन्त्रवाद मनुष्य को स्वयं के भाग्य का निर्माता मानता है। अतः उसके कार्यों पर किसी भी प्रकार का सामाजिक या कानूनी बंधन नहीं होना चाहिए ताकि मनुष्य को उसकी उन्नति का पूर्ण अवसर मिल सके।

स्वेच्छातन्त्रवाद मुख्य समर्थकों में एफ़. ए. हेयक, मिल्टन फ्रीडमैन, रॉबर्ट नॉजिक आदि प्रमुख है।

हेयक के विचार :— समकालीन ऑस्ट्रियाई अर्थशास्त्रवेत्ता एवं राजनीतिक दार्शनिक हेयक का काल 1899-1992 का रहा है। शिकागो विश्वविद्यालय के प्रो. हेयक को 1974 में नोबेल- अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार भी दिया गया। राजनीति चिंतन में के क्षेत्र में उन्होंने स्वतन्त्रता पर अपना किया विस्तृत विचार दिया।

हेयक ने बाजार अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हुए लिखा है कि केन्द्र द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था व्यक्ति के आन्तरिक ज्ञान का उपयोग पूर्णतः नहीं कर पाता है। हेयक ने अपनी पुस्तक 'रोड टू सर्फडम' (1944) में economic planing से बताया कि केन्द्र

सर्वाधिकारवाद का जन्म होता है। हेयक ने Rule of law को बनाए रखने के लिए कानूनों की गतिविधियों का एक सीमा तक ही उचित माना है। हेयक ने अपने समाज के लिए कुछ ~~संस्थाओं~~ सामाजिक संस्थाओं को आवश्यक माना है परन्तु उसका उदारवाद आधुनिक पूँजीवादी - कल्याणकारी राज्य के प्रयोजन समाजात्मक उदारवाद से अलग है।

हेयक ने "द कॉन्स" The Constitution of Liberty" में यह स्पष्ट किया है कि उदारवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सरकार द्वारा बल प्रयोग के अवसर कम रहते हैं। उसका मानना है कि विभिन्न सामाजिक सेवाओं को बाजार प्रणाली से अलग रखना चाहिए। इसके अन्तर्गत प्रतियोगिता को बढ़ावा देना चाहिए पर असमर्थ लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति अलग से करना चाहिए। उदाहरण के लिए उनके लिए न्यूनतम आय की व्यवस्था करनी चाहिए।

अपनी नवीन कृति Law legislation and liberty में हेयक ने कानून, विधि-निर्माण और स्वतन्त्रता के विचारों को विकसित किया है। हेयक Legal positivism की आलोचना करते हुए चिरसम्मत उदारवाद को विकासवादी विचारों के साथ ~~मिलाकर~~ सम्मिलित किया। हेयक ने सामाजिक न्याय के विचार को बाजार अर्थव्यवस्था से अलग रखा है। उसने बहुलवादी विचारों पर आधारित हित-समूहों की भी आलोचना की है।

हेयक ने नागरिकों की स्वतन्त्रता एवं मानव कल्याण को ध्यान में रखकर अपने उदारवादी संविधान में शक्ति के विभाजन पर बल दिया है। हेयक Denationalization of money पर भी बल देता है। हेयक ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं बाजार प्रणाली के विभिन्न शर्तों पर अपना विचार दिया है। उसने उदारवाद एवं बाजार प्रणाली में भी सम्बन्ध स्थापित किया है।

हेयक के अनुसार दूसरों के Arbitrary will से अलग रहकर ही व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता का सही उपयोग कर सकता है। यही हेयक के उदारवाद का मूल मंत्र भी है। हेयक इसे वैयक्तिक स्वतन्त्रता की संज्ञा देता है।

हेयक का उदारवाद सरकार की बाध्यकारी शक्तियों को सीमित रखता है। हेयक ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की स्पष्ट व्याख्या के लिए तीन अन्य स्वतन्त्रताओं की चर्चा की है

(i) Political freedom → राजनीतिक स्वतं. लोकतन्त्र का आधार है। यह व्यक्ति को सरकार के चयन से लेकर कानून निर्माण तक में हिस्सा देता है। परन्तु यदि कोई गैर लोकतांत्रिक व्यवस्था अनुमतिमूलक हो जाए तो राजनीतिक स्वतन्त्रता वैयक्तिक स्वतन्त्रता के लिए पर्याप्त नहीं रह जाता है।

(ii) Inner freedom — हेयक के अनुसार व्यक्ति के कार्य अपनी योग्यता एवं इच्छा पर आधारित होना चाहिए दूसरों द्वारा विवश नहीं किए जाने पर भी कभी कभी व्यक्ति की स्वतन्त्रता स्वयं की इच्छा या आन्तरिक संवेगों द्वारा संचालित होता है। अतः भी वैयक्तिक स्वतन्त्रता से भिन्न है।

(iii) Freedom as power → शक्ति रूपी स्वतन्त्रता व्यक्ति की कार्य शक्ति पर निर्भर करता है। व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार विभिन्न विकल्पों में से किसी को चुन सकता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति कानून से अलग रहकर भी कुछ करने में समर्थ है पर जो कार्य कानून के दायरे से बाहर हो उसे किसी कारणवश करने में असमर्थ हो जाता है। अतः इसे वैयक्तिक स्वतन्त्रता से अलग पहचान सकते हैं।

हेयक स्वतन्त्रता को केवल रूप को समर्थन के लिए प्रतिबंधों का अभाव आवश्यक मानता है। समष्टिवादियों की

आलोचना करते हुए हेयक ने राज्य के हस्तक्षेप को अनुचित ठहराया है। अत्यधिक हस्तक्षेप से व्यक्ति की स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है।

हेयक का मानना है कि स्वतन्त्रता शब्द के प्रयोग को सीमित रखना है। व्यक्ति की स्वतन्त्रता को सही अर्थ में समझा जा सकता है। राज्य को चाहिए कि वह केवल विभिन्न बाधाओं को समाप्त कर व्यक्ति को स्वतन्त्रता का सही उपयोग करने दे।

हेयक ने स्वतन्त्रता सिद्धान्त को परिभाषित करते हुए कहा है कि आधुनिक युग में ज्ञान असंख्य मनुष्यों में बिखरा है। अतः किसी एक व्यक्ति के विचारों का अनुसरण करने का तात्पर्य है कि अधूरे ज्ञान के आगे झुक जाना अतः सम्पूर्णता के लिए सम्पूर्ण मानवीय गतिविधियों को समायोजित करना आवश्यक है।

अतः एक ही केन्द्रीय केन्द्रीय ज्ञान द्वारा सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का संचालन किया जाना अनुचित है। हेयक ने प्रतियोगिता का समर्थन करते हुए कहा है कि राज्य सभी व्यक्तियों के योग्यता का लाभ ज्यादा से ज्यादा मिल सके इसके लिए राज्य द्वारा प्रतियोगिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

हेयक ने माना है कि प्रगति के लक्ष्य भी निरन्तर बदलते रहते हैं। हेयक के विचारों का विस्तृत अध्ययन से यह पता चलता है कि स्वयं व्यक्ति भी सबसे महत्वपूर्ण तत्व नहीं है। वह व्यक्ति की गरिमा के प्रति अत्यधिक चिन्तित भी नहीं है। उसका मानना है कि स्वतन्त्रता समाज के भौतिक एवं सांस्कृतिक प्रगति के लिए आवश्यक है चूंकि मानवीय बुद्धि में नए-नए विचारों का हमेशा जन्म होता रहता है अतः प्रगति के लक्ष्य भी बदलते रहते हैं।

हेयक स्वतन्त्रता के समान वितरण में विश्वास नहीं करता है।

उसका मानना था कि सभी लोगों को सीमित स्वतन्त्रता मिलने से बेहतर है कि कुछ लोगों को पूर्ण स्वतन्त्रता मिल जाए मुख्य बात यह है कि वह स्वतन्त्रता कितना महत्वपूर्ण है हेयक व्यक्ति को सामाजिक प्रगति का साधन मानता है साध्य नहीं।

हेयक के उपर्युक्त विचारों की काफी आलोचना भी हुई है निकोलियन ने हेयक की आलोचना करते हुए लिखा है कि हेयक विशेष वर्ग के हितों का पोषण करता है वह निर्बल लोगों की तुलना में समर्थ लोगों के हित पर ज्यादा बल देता है फाइनर ने भी हेयक की आलोचना की है हेयक ने फासिस्टवाद साम्यवाद एवं उदार समाजवाद को व्यक्ति के आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए खतरनाक माना है हेयक केन्द्रीयकरण का प्रबल विरोधी रहा है उसका मानना है कि किसी भी प्रकार का नियोजन जिसमें आर्थिक गतिविधियाँ एक ही जगह से संचालित होता है व्यक्ति के लिए खतरनाक है यह व्यवस्था सर्वाधिकारवाद की ओर ले जाता है हेयक ने भी खोखली स्वतन्त्रता का सुझाव दिया है वह केवल प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।

हेयक ने यह माना है कि १९वीं शताब्दी के अहस्तक्षेप के सिद्धान्त को आज की बदलती हुई परिस्थितियों में लागू करना उचित नहीं होगा। आर्थिक गतिविधियों की अस्थिरता के फलस्वरूप उत्पन्न बेरोजगारी की समस्या, बीमारी, बुढ़ापा आदि के लिए सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। किन्तु हेयक ने यह स्पष्ट नहीं किया कि बिना केन्द्रीय नियोजन के सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था कैसे की जाए। हेयक ने कल्याणकारी राज्य के कार्यों की आलोचना तो की है किन्तु सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने हेतु क्या व्यवस्था होनी चाहिए इसकी चर्चा नहीं की है

हेयक ने स्वतन्त्रता एवं समानता को एक-दूजे से पृथक करके स्वतन्त्रता को कमजोर कर दिया है। हेयक बाज़ार तन्त्र में हस्तक्षेप किए बिना ही लोगों के लिए सार्वजनिक सेवाओं की स्थापना करना चाहता है जो असम्भव सा प्रतीत होता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद भी समकालीन राजनीतिक चिन्तन पर हेयक ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। हेयक ने ब्रिटिश राजनीतिक चिन्तन में एक बार फिर से उदारवाद के प्रति दिलचस्पी पैदा कर दी है।